रविवार, दिनाँक 23-07-2023 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय

सजनों अब मज़बूती में आ जाना क्योंकि आज सावन की मीटिंग है। यह समय है आगे बढ़ने का और अपने लक्ष्य को पाने का। इस सन्दर्भ में आज सत्संग में और ध्यान कक्ष में जो बातचीत होगी वह सबने बड़े ध्यानपूर्वक सुननी है। ध्यानकक्ष में तो आज से बच्चे, युवा बच्चे स्वार्थ की बातें करना छोड़ परमार्थ की बातें करने का आरम्भ करने जा रहे हैं। मतलब यह है कि जो हम बड़े नहीं कर पाए, आज से उस शुभ कार्य का आरम्भ ये बच्चे करने जा रहे हैं यानि जिन्होंने अपना जीवन लापरवाही वश गलतफहमी में गुजारकर सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों के विपरीत भाव-स्वभाव अपनाकर तद्नुसार अपने बच्चों की पालना करने का गुनाह किया, अब यह युवा पीढ़ी उस गुनाह की सजा से सबको बचाने हेतु सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों अनुसार आगे बढ़ने लगी है। अतः आज के दिन को प्रसन्नता का दिन, चारित्रिक निर्माण का दिन मानो और खुशी में आ जाओ। अब इसी खुशी से भजन बोलोः-

खबरदार खबरदार खबरदार रहो, महाबीर जी दुनियां विच आ गये ने।।

आत्मपद दा रस्ता बता रहे ने, महाबीर जी दुनियां विच आ गये ने।

मोह माया दी नींद विच घूक सोये, महाबीर जी आके जगा रहे ने।

भैणां पाप न करो धर्म मार्ग चलो, बली ए उपदेश सुना रहे ने।।

शास्त्र महाबीर दा रस्ता बताया ए, बली सांवले चरण दिखा रहे ने।

सांवले चरणां दे मालिक महाबीर जी, दर्शन सारियाँ भैणां नू करा रहे ने।।

किसे नू युक्ति देवन किसे नू उपदेश देवन, सिया राम लषण नू मिला रहे ने।

दिन चाह विच गुजरे रातीं नींद आवे, ओ शान्ति उपदेश सुना रहे ने।।

जेहड़ी भैण महाबीर जी दा नाम ध्यावे, ओहनू मुक्ति दी पदवी दिवा रहे ने।

कलयुग ने है सब नू घबराया, महाबीर कलयुग नू आप हटा रहे ने।।

अग्गे सेवकां नू महाबीर जी भेजदे रहे, हुण चरणां दे मालिक आप आ गये ने।

सदके जावां सदके जावां महाबीर जी तों, जेहड़े सब दियां आशा पुजा रहे ने।।।

दासी चरणां तों बलिहार जावे, सानू भुलियां नू रस्ते ला रहे ने।

खबरदार खबरदार खबरदार रहो, महाबीर जी दुनियां विच आ गये ने।।

सजनों सुनिश्चित रूप से अगर आपने यह भजन ध्यान से सुना है तो आपने असत्य-अधर्म का रास्ता छोड़ सत्य-धर्म का रास्ता अपनाने का निश्चय ले लिया होगा। इस सन्दर्भ में जानो कि किसी भी रास्ते को अपनाने से पूर्व उस रास्ते के विषय में जानना होता है। अतः जानो कि यह रास्ता आत्मपद की ओर जाता है और इस पर निर्विघ्नता से चलने के लिए आपको सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे से जुड़े होने के नाते उचित यानि युक्ति-संगत नाम अक्षर मिला हुआ है। जानो यह युक्ति आत्मपद प्राप्त करने हेतु अपने आप में परिपूर्ण है। अतः यदि आप नाम का विधिवत् जाप करते हो और बगैर मनमत लगाए इस युक्ति पर स्थिरता से बने रहते हो तो आप मन्ज़िल को प्राप्त कर सकते हो। इस हेतु बस करना यह है कि जो समय आप संसार में लगाते हो, उस समय को वृथा गँवाने के स्थान पर युक्तिसंगत भक्ति-भाव में लगाओ। कहने का आशय यह है कि अपना जो समय आप ससांर में नाशवान प्राप्त करने के लिए लगाते हो, अगर उसे आप परमार्थ में आगे बढ़ने के लिए लगाओ तो भौतिक अमीरी से कई गुणा अधिक पारमार्थिक अमीरी प्राप्त कर सकते हो। जानो पारमार्थिक अमीरी का कोई अन्त नहीं होता क्योंकि इस अमीरी को प्राप्त कर लेने पर मन को परम सन्तोष प्राप्त हो जाता है। इसके विपरीत भौतिक अमीरी से तो तृष्णा का रोग लग जाता है। यहाँ विचार करने की बात यह है कि अभी तक ऐसा क्यों नहीं किया?

सजनों यदि इस परिप्रेक्ष्य में अभी आपको अपने पर पछतावा हो रहा है तो अपने ख़्याल को पलटा खवाओ और अपना बिगड़ा खेल सँवार लो। यहाँ याद रखो कि महाबीर सत्संग सभा की इस दुनियाँ में स्थापना अपने आप में कुदरत का बहुत बड़ा संकेत है कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी कलियुग समाप्त करने और घर सतयुग बनाने हेतु इस दुनियाँ में आ गये हैं। सजनों इस सत्य को मानो और सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों को धारणकर व्यवहार में ले आओ। इस तरह निष्पाप जीवन जीने के काबिल बन जाओ और समय रहते ही सम्भल जाओ। यही परिवर्तन आज से होने जा रहा है। आशय यह है कि नादानी, हवस या कमज़ोरी के कारण अपने जिन युवा बच्चों को आप परमार्थ के रास्ते पर नहीं चढ़ा पाए, आज से अब वही बच्चे सबके समक्ष परमार्थ की बात आत्मज्ञान अनुसार करने वाले हैं व सबके सम्मुख रखने वाले हैं। अन्य शब्दों में उन्हें एक अच्छा इन्सान बनाने के लिए आप जो पुरुषार्थ नहीं कर पाए, वही पुरुषार्थ अपने माता-पिता व कुल संसार को अच्छा बनाने के प्रति ये बच्चे करने जा रहे हैं। अतः अब तो सम्भलो और समझदार बन जाओ क्योंकि इतना बड़ा मौका अपने बिगड़े हुए बच्चों को व घरों को सँवारकर सत्य-धर्म के प्रतीक बनाने हेतु आपको मिलने जा रहा है। यही बच्चे फिर कुल दुनियाँ तक देखना कैसे इस सन्देश को पहुँचाएँगे।

इस बात के दृष्टिगत सजनों हम तो यही कहेंगे कि मूर्खता छोड़ दो और जागृति में आ जाओ। इसीलिए तो जगह-जगह पर जागृति प्रोग्राम हो रहे हैं। उन कार्यक्रमों का मकसद यही है - सोए हुए सजनों को जगाना और सद्मार्ग पर ले आना ताकि वे आत्मपद प्राप्त करने की हितकर बात को समझें और जीवन विजयी हो जाएँ। सजनों भिन्न-भिन्न तरीकों से कुदरत की कृपा बरस रही है, उसे समझो और कृपापात्र बन जाओ। इस हेतु द्वारे के नीति-नियमों का हर परिस्थिति में अडिगता से पालन करो और सम बने रहो। न किसी के नीचे लगो और न ही किसी को अपने नीचे लगाओ। इस तरह से समबुद्धि हो जाओ। समबुद्धि बनने हेतु जो कोई भी युक्ति प्राप्त करना चाहता है, वह कर सकता है। जानो अगर रुचि हो तो इस द्वारे पर सब कुछ प्राप्त हो जाता है। अब आगे सुनोः-

(श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)

किस तरह बताऊं दुनियां दी बात, किस तरह बताऊं दुनियां दी हालत।

ओ मेरे साजना ओ मेरे साजना, ओ मेरे साजना।।

ओ ओ ओ ओ ओ ओ ओ।

बिगड़ गई दुनियां दी हालत, कैसी पकड़ी ने चाल।

ओ मेरे साजना ओ मेरे साजना, ओ मेरे साजना।।

ओ ओ ओ ओ ओ ओ ओ।

बिगड़ी बात संवरे किस तरह किवें रहूं रखवाल।

ओ मेरे साजना ओ मेरे साजना, ओ मेरे साजना।।

ओ ओ ओ ओ ओ ओ ओ।

दुनियां दी घट गई आरबला ओ किस तरह पकड़न ख्याल।

ओ मेरे साजना ओ मेरे साजना, ओ मेरे साजना।।

ओ ओ ओ ओ ओ ओ ओ।

गरुड़ ते आये लक्ष्मी संग भगवन, जनता करे प्रणाम।।

हथ जोड़ करे चरण बन्दना, कोटि कोटि प्रणाम।

ओ मेरे साजना ओ मेरे साजना, ओ मेरे साजना।।

ओ ओ ओ ओ ओ ओ ओ।

जनता जब बोलना चाहा, बोल उठे हनुमान।।

नाम युक्ति असां बक्षी, तुसां वचन न कीते प्रवान।

ओ इन्सानों, ओ इन्सानों, ओ इन्सानों।

ओ ओ ओ ओ ओ ओ ओ।।

(जनता कह रही है)

नगर निवासियां दी हर लई बुद्धि, बुद्धि मनुराज ही जान।

दाता जी बल बुद्धि विद्या बक्षो, हनुमान बलवान।

हनुमान बलवान, हनुमान बलवान, हनुमान बलवान।।

ओ ओ ओ ओ ओ ओ ओ।

हनुमान जी सबदी सुनदे आरजू, साडी वी सुणेन।

चरण शरण लई हनुमान जी दी, हुण साडी वी मनन करेन।।

ओ मेरे साजना ओ मेरे साजना, ओ मेरे साजना।

ओ ओ ओ ओ ओ ओ ओ।

बुद्धि हीन असां हो गए, साडी बुद्धि वी तीक्ष्ण करेन।।

मनुराज विच बुद्धि गोते खांदी, ओन्हुं वी तरना सिखैन।

ओ मेरे साजना ओ मेरे साजना, ओ मेरे साजना।।

सजन श्री शहनशाह हनुमान जी हम कलियुगी जीवों को सतयुग का ज्ञान प्रदान करने के लिए हर समय तत्पर हैं। इस सन्दर्भ में वह भिन्न-भिन्न तरीको से हमारी बुद्धि को कलियुग से उबारकर सत्य के संग हमारे ख़्याल को खड़ा करने का प्रयास भी कर रहे हैं। इतना होने के बावज़ूद भी हमारी बुद्धि मनुराज में गिर जाती है तो हम स्वयं ही कसूरवार हैं। यहाँ सजनों अपनी जाँचना करो कि इतने साल द्वारे से जुड़े रहने के बावज़ूद भी आपकी बुद्धि मनुराज में गिरी हुई है या फिर जगत से आज़ाद है? अगर लगे कि बुद्धि मनुराज में गिरी हुई है तो फिर समझो कि जगत आपकी बुद्धि पर छाया हुआ है और आप अज्ञानमय अन्धकार अवस्था में विचर रहे हो। इसी कारण आत्म साक्षात्कार करने में असक्षम हो व मौत के करीब हो। आशय यह है कि इतना कुछ सुनने व समझने के बावज़ूद भी यदि

अपने अन्दर कुछ परिवर्तन लाने की चेष्टा पैदा नहीं होती तो इससे समझ आता है कि आप कलियुग के धोखे में आकर हिम्मत हार बैठे हो। इस सन्दर्भ में याद रखो कि यह अनमोल मानव चोला बार-बार नहीं मिलता। इसकी कीमत को समझो और अपने आप को समझाकर सँवर व सम्भल जाओ। इस तरह सतयुगी संस्कृति में ढल जाओ। अब आगे ध्यान से सुनोः-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

शब्दः-

गरुड़ ते भगवन चल पड़े, दरबार पहुंचदियाँ ऊपर फुल वर्षे।

वर्षे बेशुमार फुल्लां दी झड़ी हो गई, हेठां संस्था बैठी सी उठ के खड़ी हो गई-

हथ जोड़ उठ के खड़ी हो गई।।

-कव्वाली-

वक्त दे मुताबिक सजन ओ वक्त दे मुताबिक सजन, ओ सब कोई प्यार करता है।

सब कोई प्यार करता है, ओ सब कोई प्यार करता है।

वक्त दे मुताबिक सजन ओ सब कोई प्यार करता है।।

ओ जदों वृद्ध अवस्था आवे हां हां जदों वृद्ध अवस्था आवे, फ़र्ज़ अदा से डरता है।

जदों वृद्ध अवस्था आवे, फ़र्ज़ अदा से डरता है।।

फ़र्ज़ अदा है ओ जीत, बाज़ी जित लई उस अपनी।

जीत सदा ही जीत सजनों जीत सदा ही जीत।।

फ़र्ज़ अदा करो इन्सान, फ़र्ज़ अदा है बड़ा महान।

इस बात दा विचार जेहड़ा सजन करदा है।।

फ़र्ज़ अदा दी महिमा है महान, फ़र्ज़ अदा करो इन्सान।

ओ बेख़ौफ़ा बेख़तरा ही विचरदा है, ओ बेख़ौफ़ा बेख़तरा ही विचरदा है।।

फ़र्ज़ अदा जेहड़ा करे इन्सान, बुद्धि लई उस अपनी पहचान।

इन्सानां विचों अक्लवान, उस जीवन अपना बना ही लिया, पा लिया आत्मिक ज्ञान।।

आत्मिक ज्ञान उसने पा लिया, ओहदी जोत जगे निर्वाण।

ओहदा रूप रंग न रेखा राहवे, ओ पहुंच गया परमधाम।

परमधाम ओ पहुंच गया, बेअन्त है ओहदा नाम।।

जेहड़ा खुश हो के करे फ़र्ज़ अदा, ओहदे ते खुश किवें न होवन परवरदिगार।

ओ महाराज जी दे दर्शन पांदा है, ओ जीवन सफल बनांदा है।

जैं जीवन सफल बना लिया अपना, ओ फिर नहीं पछोतांदा है।।

ध्वनिः-

स्वार्थी मतलब दे, मतलब दे हिन यार, स्वार्थी मतलब दे।

मतलब जेहड़े वेले निकल गया, फिर करदे नहीं ओ प्यार।

स्वार्थी मतलब दे, मतलब दे हिन यार, स्वार्थी मतलब दे।।

शब्दः

ओहदी जोत जगे मन मन्दिर।

ओहदी जोत जगे जग अन्दर।।

सजनों यह आनन्दमय जीवन जीने का व पारिवारिक एकता का सन्देश है। अन्य शब्दों में यह हर क्षण दुःख सुख के साथी बने रहने व नव आगन्तुकों के प्रति जो कुदरत प्रदत्त कर्तव्य है उस दायित्व को ठीक से निभाने का सन्देश है। इसके अतिरिक्त इस कीर्तन के अन्तर्गत जो घर में प्रौढ़ या युवा हो गये हैं, उनके प्रति बच्चों का क्या दायित्व है, उसका निर्वहन ठीक से करने का सन्देश भी है। इसी के साथ इस सन्दर्भ में जो आज कर्त्तव्य विमुखता का चलन चल रहा है, उसका भी इसमें विस्तार से वर्णन है, जैसे अभी आपने सुना हैः-

स्वार्थी मतलब दे, मतलब दे हिन यार, स्वार्थी मतलब दे

मतलब जेहड़े वेले निकल गया, फिर करदे नहीं ओ प्यार

यह सजनों आज की हक़ीकत है। इस हक़ीकत का आप अपने जीवन में अनुभव भी करते होंगे। इस सन्दर्भ में विचारना है कि आपने अपनी औलादों को स्वार्थपरता का पाठ क्यों पढ़ाया यानि क्योंकर उन्हें परमार्थ का पाठ नहीं पढ़ाया ताकि वे केवल अपने लिए जीवन न जीते हुए सामूहिक सुख के निमित्त जीवन जीना उचित समझें। ऐसी पालना आपने क्यों नहीं की? इसी कारण सजनों जो बच्चे जीव रूप में अपना जीवन सफल बनाने के लिए इस संसार में आए आपने उन्हें जगत में भरमाकर भटका दिया। इस तरह परमार्थ का ज्ञान न देकर आपने उनके अन्दर आत्मिकज्ञान प्राप्त करने की रुचि ही खत्म कर दी। कैसे माँ-बाप हो आप जिन्होंने अपने ख़ून के प्रति ही इतनी बड़ी लापरवाही दिखाई? इसी कारण आपका ख़ून दुष्चरित्रता का प्रतीक बन गया। ऐसे दुष्चरित्र मानव जो भी अपने जीवन-व्यवहार में सीखते हैं वही फिर अपने घरों में वृद्ध सजनों के प्रति करते हैं। इसी कारण आज वे अपने परिवारों में बड़ों की सेवा नहीं करते। अगर करते भी हैं तो मनमत अनुसार उन्हें दुत्कार कर करते हैं। ऐसी सेवा का परिणाम तो सजनों फिर भोगना ही पड़ता है। हम पूछते हैं कि फिर परिणाम आने पर क्यों रोते हो? क्यों उनके बिगड़ जाने पर ईश्वर को दुहाई देते हो? इस सन्दर्भ में मानो कि अगर आपने अपने बच्चों को आहार-विहार सात्विक दिया होता तो आप उनके सजन कहलाते। ऐसा नहीं किया इसलिए दुःख भोग रहे हो। अब युवाओं ने कलियुगी इन्सानों से ऐसा चलन नहीं सीखना अपितु आपने तो परिवर्तन को ध्यान में रखना है और याद रखना है कि समयकाल सतयुग में प्रवेश कर रहा है। इसलिए आपको अपने जीवन के प्रति सतर्क होना है और अपने जीवन-यापन का ढंग सत्य-धर्म

अनुसार साधना है। ऐसा करते समय हम मानते हैं कि शुरु-शुरु में पालना के कारण कठिनाई आयेगी पर जो भी अपने आप से प्यार करता है वह उस कठिनाई को न देखते हुए यह पुरुषार्थ कर दिखलायेगा। इसी तथ्य के दृष्टिगत सजनों आज आपको बुज़ुर्गों व बच्चों के प्रति अपने कर्त्तव्यों से परिचित भी कराया जाएगा ताकि सब इन्सानियत में ढलें और मानवता का स्वरूप बने यानि अपने मानव धर्म के सिद्धान्त अनुसार जीवन की हर परिस्थिति में स्थिरता से बने रहने के काबिल बनें।

यहाँ याद रखो कि हम मानव हैं और मानवता ही हमारा धर्म है। यह मानवता निष्कामता की प्रतीक है। अब जहाँ निष्कामता है, वहाँ मानव धर्म मज़बूत है। ऐसा इन्सान मानव धर्म के अनुसार जो भी करता है वह सर्वहित को दृष्टिगत रखते हुए निष्पाप ही करता है। अन्य शब्दों में वह किसी का नुक्सान नहीं करता, किसी से छल कपट नहीं करता और उसके भाव-स्वभाव कभी भी नकारात्मक या स्वार्थपरता के प्रतीक नहीं होते। याद रखो एक बार यदि स्वार्थ हमारे अन्दर घर कर गया तो स्वार्थी संगी-साथी हमारे संग जुड़ते जाते हैं। हम 'काम' के वशीभूत हो जाते हैं। अब 'काम' आ गया तो क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार मुफ्त में हमें मिल जाते हैं और हम भाव-रूप से बीमार हो जाते हैं। इस तरह इस बीमारी का फिर किसी के पास उपचार नहीं मिलता क्योंकि इसका एक मात्र ईलाज होता है - आत्मज्ञान। आत्मज्ञान प्राप्त कर सजनों हमने अपने भाव का विशुद्धिकरण करना है। ऐसा करने से हम सहजता से इन्सानियत में ढल जाएँगे। अब कहते हैं कि शुभ कार्य में देरी क्यों? तो आज से ही सजनों इस शुभ कार्य की शुरुवात होने जा रही है। युवा बच्चे ही अब आत्मज्ञान के बारे में बताएँगे। आपकी जानकारी हेतु इस क्रिया का केवल वसुन्धरा पर ही शुभारम्भ नहीं हो रहा बल्कि अन्य शहर वालों व विदेश में रहने वालों ने भी यह क्रिया अपने वहाँ करवानी है। बच्चों को अब बोलना होगा। इस सन्दर्भ में अब हम अधिक समय बर्बाद नहीं कर सकते। सो बड़ों ने अब सम्भलना है और बच्चों के कार्य में दखल नहीं देना यानि उनके मानसिक विकास में अवरोधक सिद्ध नहीं होना। अतः ध्यान से आगे सुनोः-

सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार

हर माता-पिता का अपने बच्चों के प्रति सर्वमहान कर्त्तव्य

सजनों इस संदर्भ में सबसे पहले माता-पिता का अर्थ समझते हैं। जानो जहाँ पिता, संतान का जन्मदाता सज्जन पुरुष कहलाता है, वहीं माता, जन्म देने वाली आदरणीय स्त्री होती है। इसलिए कुदरत के नियमानुसार जहाँ पिता का कर्त्तव्य होता है कि वह अपनी औलाद को वेद विहित आत्मिक ज्ञान अनुसार संस्कारों के रूप में इस तरह से सींचे कि वह स्वाभाविक स्वरूप से सज्जनता का प्रतीक बनें, वहीं शांति की प्रतीक कुलदेवी माता का कर्त्तव्य बनता है कि वह अपनी संतति की पालना के प्रति हर क्षण इस तरह से सतर्क रहे कि उसके मन में किसी विध् भी शारीरिक भाव-स्वभाव उत्पन्न होने की दुष्क्रिया का आरंभ न हो। कहने का तात्पर्य यह है कि वह उन्हें गर्भावस्था से ही सात्विक आहार-विचार व व्यवहार ग्रहण करने की पूर्णरूपेण योग्यता प्रदान करे ताकि वह परमार्थ बन, मानव रूप में अपने जीवन का महान लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करने में समर्थ हो जाएं। मानो जो भी माता-पिता अपने इस महान कर्त्तव्य को सहर्ष नीतिसंगत निभाने में सफल रहते हैं, उनके परिवार के हर सदस्य का मन निर्विकारिता का प्रतीक होता है जिसके फलस्वरूप परिवार में एकमत्तता का चलन सहज व सरलता से चलता है। जानो ऐसे सशक्त सतयुगी परिवार की ही तीनों लोकों में यश कीर्ति फैलती है, जो अपने आप में जीवन विजयी होने का सूचक होता है।

सजनों अगर उपरोक्त हितकर तथ्यों को समझने के पश्चात् आपके मन में भी एक सुन्दर, स्वस्थ, नेक, पराक्रमी, निःस्वार्थी व सच्चरित्र संतान की अभिलाषा उत्पन्न हुई है तो अभी से ही उनकी पालना शास्त्रविहित् नीति नियम अनुसार करना सुनिश्चित करो ताकि उनके मन में संतोष, धैर्य जैसे गुणों का वर्धन हो और उनके लिए सत्य धर्म के निष्काम रास्ते पर स्थिर मानसिकता से बने रह निष्पाप जीवन जीना सहज हो जाए। कहने का तात्पर्य यह है कि ए विध् उनके प्रति सज्जनता दिखा अपनी संतान को श्रेष्ठ, विद्वान, गुणवान, बलवान, धनवान, बुद्धिमान तथा ज्ञानवान बनाने में सफल हो कर्त्तव्यपरायण माता-पिता कहलाओ। जानो ऐसा पराक्रम दिखाने पर ही वे सृष्टि सृजन व विकास की क्रिया में अपना पूर्णतः योगदान देने में सक्षम एवं स्वतन्त्र बन पाएंगे। इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार इस महत्त्वपूर्ण बात को समझोः-

फ़र्ज़ अदा हंसकर करो, रोकर नहीं क्योंकि फ़र्ज़ अदा भक्ति से भी ऊपर है। जानो यह है मन को जीतना। मन जीते जग जीत।

इस संदर्भ में यदि हम योग्यता की बात करें कि कौन से दम्पत्ति कुदरती उपहार के रूप में प्राप्त हुई अपनी संतान के प्रति अपने इस महान दायित्व को कुशलता से सम्पन्न करने में सक्षम हो पाते हैं, तो इस संदर्भ में जानो कि जिन दम्पत्तियों की शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वस्थता ठीक होती है व जो कामवासना से मुक्त होकर, आत्मिक ज्ञान अनुसार अपने बच्चों के अंतर्मन को सींचते हुए, उन्हें तद्नुरूप ही सत्यता से अंतर्निहित गुणों का संयमित ढंग से व्यवहार करने की कला में निपुण बनाते हैं, वे ही सहजता से इस शुभ कार्य को सिद्ध कर, आत्मपद की प्राप्ति कर पाते हैं और अक्षय यश-कीर्ति को पाते हैं। तभी तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में माता-पिता के फ़र्ज़ अदा की महानता का ज़िक्र करते हुए कहा भी गया हैः-

सजन माता-पिता का फ़र्ज़ अदा जो है, उच्च पदवी है, इसी से आत्मपदवी की प्राप्ति हो सकती है।

यहाँ प्रश्न यह उठता है कि हम दम्पत्ति जीवन के जिस पड़ाव में हैं यानि वर्तमान परिवेश के दृष्टिगत, अब तक हमारा जितना भी आधा-अधूरा शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास हो चुका है, उसके अंतर्गत कैसे इस महान दायित्व को कुशलता से सम्पन्न करें? तो इस विषय में सजनों हम तो यही कहेंगे कि घबराओ नही क्योंकि जीवन की हर अवस्था व परिस्थिति में उचित मार्गदर्शन करने वाला सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमारे पास है। इस ग्रन्थ में गृहस्थाश्रम में रहते हुए, उचित युक्ति के वर्त-वर्ताव द्वारा, प्रत्येक के प्रति अपना फ़र्ज़ अदा भली-भांति निभाने के सारे तरीके बहुत ही सरलता से वर्णित हैं। अतः यदि आप सब (जो अभिभावक बन चुके हो, या आने वाले कुछ वर्षों में बनने वाले हो) चाहो तो आप भी इन युक्तियों को प्रवान कर, न केवल इस महान कार्य को सहजता से सम्पन्न कर सकते हो अपितु साथ ही साथ जीवन की वास्तविकता और अंतर्निहित परिपूर्ण सत्य से परिचित हो अपने इस शरीर रूपी दरख़्त को भी सँवार सकते हो और सुख-शांति व एकता से आनन्दमय जीवन व्यतीत करने में सफल हो अपने पर व सब पर उपकार कर सकते हो।

इसी परिप्रेक्ष्य में आओ आज सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में बच्चों के प्रति जो माता-पिता के सर्वमहान कर्त्तव्य का वर्णन है, उसको युक्तिसंगत समझें। जानो इस संदर्भ में अविचारयुक्त रास्ता छोड़ विचारयुक्त रास्ता अपनाने हेतु कुदरती शास्त्र में सर्वप्रथम कहा गया हैः-

1

अपना घर सतयुग बनाओ। घर विच एकता लिआओ।

पति पत्नी दा घर विच प्यार होवे।

इस हेतु

अपनी रैहनी-बैहनी ठीक रखो।

आपका उठना-बैठना, खाना-पीना, बोल चाल सब ठीक होवे,

एकता होवे भिन्न भेद न होवे।

अगर घर विच कोई गल हो जांदी है, तां उसनूं प्यार नाल बैठ के सुलझाओ।

याद रखो

अगर पति-पत्नी ठीक खुश होवनगे तां बच्चयां दे स्वभाव अपने आप ठीक हो जावनगे।

2 'अपने बाल बच्चों को साफ सुथरा रखो'। इस हेतु नेक नीयती से सत्य को धारण कर, अन्दरूनी व बैहरूनी वृत्ति की स्वच्छता बनाए रखो ताकि बच्चे घर के रख-रखाव के तरीके, परस्पर बातचीत व आपसी व्यावहारिक एकता से प्रभावित हों और उन सबके अंदर भी ये सदाचारिता के प्रतीक सात्विक सद्गुण अपनाने की गहन इच्छा व रुचि उत्पन्न हो।

3 बच्चों के साथ गाली-गलौज एवं गर्ज कर ऊँची आवाज़ में वार्तालाप कदापि न करो अपितु हाँ-जी व अच्छा-जी का ही वर्त-वर्ताव करते हुए, परस्पर आदर भाव बनाए रखो। जानो ऐसा करना इसलिए भी ज़रूरी है क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा हैः-

बच्चों को जी करके बुलाना है।

आओ जी, बैठो जी, खावो जी ताकि उनके संस्कार अच्छे हो जाएँ और वह भी इसी तरह से बोलें,

और उनकी जिह्वा स्वतन्त्र हो जाए।

इस संदर्भ में सच्चेपातशाह जी भी कहते हैं कि 'क्रोध नहीं करना। बच्चों को नहीं मारना क्योकि महाराज जी उनमें भी व्यापक हैं। बच्चयां नूं गालियां भी नहीं कढनियां। असी सजन, जदों प्यार-प्यार नाल, लाड लाड नाल, बच्चयां नूं गालियां कढने हां, फिर गालियां बच्चयां नूं लग जांदियां हैन, फिर असी पछतांदे हां क्योंकि जदों बच्चे बड़े हो जांदे ने, ते कोई अच्छा कम नहीं करदे, ते घर विच क्लेश पैंदा होंदा है, फिर असी दुःखी होंदे हां। बच्चयां दे स्वभाव असी खुद बनांदे हां क्योंकि असी ठीक चलांगे ते बच्चे अपने आप ठीक चलनगे।

4 बच्चों का पालन प्रेम, वात्सल्य व सहनशीलता से करो। इस तरह अपने आहार-विचार व आचार-व्यवहार द्वारा उनके अन्दर यह बात बिठाओ कि 'हमारा रास्ता सच्चाई-धर्म का है, अतः वे भी इसी रास्ते पर चलें'। इस हेतु सजनों अपने घर का वातावरण संस्कारिक एवं आध्यात्मिक बनाओ यानि अपने बच्चों को कुदरती ग्रन्थ का अध्ययन, चिंतन व मनन करने के लिए प्रेरित करो व चोरी-ठगी को छोड़कर, नेक कमाई द्वारा उनके अच्छे संस्कार पक्के करो। 'जानो ऐसा करने से वे सीधे रास्ते पर चलेंगे और कुरस्ते पर चढ़ने से बच जावेंगे'। इस तरह गृहस्थ-आश्रम का वातावरण हर समय शान्तमय बना रहेगा।

5 बच्चों को बाल अवस्था से ही कदम-कदम पर अपनी जाँचना यानि आत्मनिरीक्षण करना सिखाओ ताकि वे अपने ख़्याल को पकड़ना सीखें और भाव-स्वभावों की धारणा के प्रति सचेतन व जागरूक बने रहें। जानो ऐसा करने से उनका संकल्प स्वच्छ बना रहेगा व सुरत कंचन हो जाएगी। जैसा कि कहा भी गया हैः-

जैसे जैसे अपने स्वभावों को पकड़ते जावेंगे वैसे वैसे सुरत कंचन होती जावेगी।

6 अपने व अपने बच्चों के मन के अन्दर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे विकारी भावों को पनपने का अवसर न दो अन्यथा संकल्प कुसंगी हो जाएगा और फिर पछताना पड़ेगा। ऐसा न हो इस हेतु इन विषय-विकारों के दुष्प्रभावों से ग्रसित हो, अपने बच्चों के सामने प्रतिकूल बातचीत, आचरण व दुर्व्यवहार करने से बचो। इस हेतु आप भी समझो व अपने बच्चों को भी समझाओ कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार हमारे ज्ञान, गुण व बुद्धि का नाश करने वाले शत्रु हैं अतः अपनी इन्द्रियों पर कंट्रोल करके यानि आत्मसंयम द्वारा इन शत्रुओं पर सदा विजयी रहो।

7 माँसाहार व अन्य नशीले पदार्थों के सेवन से स्वयं भी बचो व बच्चों को भी बचाए रखो। जानो ऐसा करना इसलिए भी ज़रूरी है क्योंकि 'जैसा खाएंगे अन्न वैसा बनेगा मन'। अतः शारीरिक-मानसिक स्वस्थता व निरोगता हेतु नाम-अक्षर चलाते हुए भोजन पकाओ व तत्पश्चात् भोग लगाकर सात्विक आहार का सेवन स्वयं करो व बच्चों को भी वही खिलाओ। इस संदर्भ में सच्चेपातशाह जी भी कहते हैंः-

'रोटी पकांदियां होइयां वी नाम चलाओ ते अक्षर चलाओ। अगर असी नाम चलांदे रोटी पकावांगे ते अन्न दे विच, इन्हां पकिया रोटियां दे विच नाम रूपी किटाणु पैदा हो जानगे। फिर असी ओह रोटियां खावांगे ते सानूं अच्छी बुद्धि मिलेगी। बच्चयां नूं वी अच्छी बुद्धि मिलेगी। इस तरह साडा घर सतयुग बन जाएगा। अगर असी फुरना करदे-करदे रोटी बनावांगे, ते फुरने वाले कीटाणु, बीमारी वाले कीटाणु साडे हत्थां विच पैदा हो जानगे, फिर असी ओन्हां हत्थां दी पकी होई रोटी खावांगे ते साडे अंदर अनेक प्रकार दियां बीमारियां

पैदा होनगियां। इस तरह साडा घर स्वर्ग दे बदले नरक बन जाएगा। इस वास्ते ऐसी नाम रूपी खुराक खाओ जैंदे नाल घर विच बीमारियां न होवन। इस तरह सारा दिन घर दा काम करदे असी अपने इष्टदेव नूं मिल सकदे हाँ।'

8 बच्चों के युवा होने पर उनके आचार-विचार व व्यवहार को परखते हुए जीवन में उन्हें स्वतन्त्रता से निश्चय व निर्णय लेने योग्य बनाओ। इससे युवाओं के ख़्याल में स्वतन्त्रता का प्रवेश होगा और ज्यों-ज्यों वे अपनी विचार-शक्ति द्वारा अपनी ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग स्वतन्त्रता से करना आरम्भ करेंगे, त्यों-त्यों उनकी बुद्धि विकसित होगी। इस प्रकार वे अपने आप को मानसिक व शारीरिक रूप से स्वस्थ महसूस करने लगेंगे और उनके अंदर कार्य करने की क्षमता, प्रसन्नता और प्रफुल्लता बढ़ेगी। यही नहीं, इसी प्रकार वे विवेकशक्ति का भरपूर इस्तेमाल करते हुए सत्य-असत्य के पारखी बनेंगे और नकारात्मक परिस्थितियों से अप्रभावित होने के कारण उनके लिए अपने जीवनकाल में सच्चाई-धर्म के निष्काम रास्ते पर बने रहना सहज हो जाएगा।

9 वर्तमान युग के हालात देखते हुए सतर्क रहो कि आपके युवा बच्चे विवाह से पूर्व ब्रह्मचर्य आश्रम के नियमों का सख़्ती से पालन करें व तद्नुसार किशोर अवस्था में ही किसी अन्य वयस्क बालक/बालिका के साथ यौन-सम्बन्ध स्थापित करने की भूल न कर बैठें। इस हेतु समय अनुसार उन्हें समझाएँ कि ऐसा करना शास्त्रविरुद्ध है व पाप है।

10 छोटी अवस्था से ही बच्चों के अन्दर आत्मिक ज्ञान प्राप्ति के प्रति रुचि पैदा करो। जानो ऐसा करना इसलिए ज़रूरी है क्योंकि जन्म उपरान्त शिशु अबोध, नासमझ, भोला व अनुभवहीन होता है यानि उसमें गम्भीरता का अभाव होता है। वयस्क होने से पूर्व उसे पर्याप्त समझ नहीं होती और अगर उसके अन्दर समय पर सत्य आत्मिक ज्ञान का वर्धन न किया जाए तो वह अज्ञानता को प्राप्त हो अनैतिक आचार-व्यवहार अपनाकर चारित्रिक हानि कर बैठता है। इस तथ्य के दृष्टिगत माता-पिता लालन-पालन के दौरान अपने अल्पवयस्क बच्चों को पढ़ाने-लिखाने व प्रशिक्षित कर अनुशासित बनाने के साथ-साथ उनकी भलाई के निमित्त उनकी बाल-बुद्धि का आत्मिक ज्ञान अनुसार विकास करें ताकि वे

समयानुसार अपने ज्ञान, गुण व शक्तियों से परिचित हो समबुद्धि व आत्मनिर्भर बनें और वयस्क होकर उत्तम पुरुष कहलाएं। यहाँ शास्त्र अनुसार जान लो कि 'उत्तम पुरुष महाराज जी को प्यारा है। इसलिये हमें चाहिए कि हम उत्तम सपुत्र बन के दिखाएं।'

11 बचपन से ही बच्चों को नाम, ध्यान और निष्काम रास्ते को पकड़ना सिखाओ। इस हेतु अपने शादीशुदा बच्चों को नाम व बाल-युवाओं को अक्षर दिलवाओ ताकि उनके लिए भौतिकता के आकर्षण से मुक्त हो, परमार्थी बनना सहज हो जाए और वे विचार, जो ईश्वर के मुख की वाणी है यानि गुरुमत है उस को पकड़ मानवता के प्रतीक बन जाएँ और सब कुछ ईश्वर के निमित्त समर्पित व अकर्त्ता भाव से करते हुए उसके कर्त्तव्यपरायण सुपुत्र कहला मोक्ष के अधिकारी बन जाएं। अंत में सजनों शास्त्र के इन वचनों को सदा याद रखोः-

गृहस्थ धर्म विच रह के, अपने आप नूं पकड़ो

फिर फ़र्ज़ अदा तुसां हँस के करो

उस ईश्वर दे घर है सब कुछ

उस ईश्वर दा द्वारा आ के फड़ो।

आगे सजनों जानो कि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा हैः

फ़र्ज़ अदा है ओ जीत, बाज़ी जित लई उस अपनी

जीत सदा ही जीत सजनों जीत सदा ही जीत

फ़र्ज़ अदा करो इन्सान, फ़र्ज़ अदा है बड़ा महान

अब जिन्होंने तो जिस प्रकार युक्तिसंगत फ़र्ज अदा करने का तरीका ग्रन्थ में बताया गया है, उस अनुसार फ़र्ज अदा नहीं किया,वे अपने बच्चोंके आप वैरी कहलायेंगे। वैर कमाया सजनों तो फिर सजनता कहाँ से मिलेगी क्योंकि कुदरत का तो यही नियम है, 'जैसी करनी, वैसी भरनी', सो अपना बीज्या आप करो प्रवान। ऐसा न हो इस हेतु सुनो कि अपने बुज़ुर्गों की सेवा कैसे हँसकर करनी है। इस सन्दर्भ में सब जैसे-जैसे बताया जाए वैसे-वैसे अपना आत्म निरीक्षण करते जाना है और जहाँ लगे कि वाँछित सुधार की आवश्यकता है, आत्म-नियन्त्रण रखते हुए स्वयं में वह सुधार ले आना और फिर सबकी पालना-पोषणा ठीक से करना ताकि बुज़ुर्ग प्रसन्न रहें और बच्चे यशस्वी बने व अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त करने के योग्य बने। अब ध्यान से सुनोः-

पर्चा नम्बर - 1

(पर्चा 23-07-1972 इतवार सावन की मीटिंग का आया यह पर्चा हमेश के लिये है)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान।

सजन जी, जय सीताराम जी।

आपकी ओर से अभी तक कोई सूचना नहीं आई कि कितने सजनों ने अपने घर सतयुग बना लिए हैं। सजनों को कहें कि वह सच बोलें। उनसे तीन बार सच बोलने को कहें कि उनकी 'हौं-मैं' की बिमारी हट गई है या अभी है। 'हौं-मैं' की बिमारी हटाने का अर्थ है कि जिस नाल मैं सजन जग रहा हूँ, उससे सब जग रहे हैं। जिन सजनों की 'हौं-मैं' की बिमारी हट गई हो तो उनकी यश-कीर्ति प्राप्ति कर लेने के बारे में लिख भेजें। इस बात की ओर से सोना नहीं जागना है और दूसरों को भी जगाना है।

आगे वचन इस प्रकार हैं कि सब स्त्री व पुरुष सजनों से पूछें कि जिनके घर में बुज़ुर्ग हैं, वे (स्त्री पुरुष दोनों) इनके साथ कैसा वर्ताव कर रहे हैं, बच्चों के साथ भी कैसा वर्ताव है।

बुज़ुर्गों की हर प्रकार से सेवा हँसकर करनी है, ऐसी सेवा करनी है कि घर में कोई कल्पना न होवे। अगर बुज़ुर्गों को क्रोध आ भी जावे तो हुक्म को पकड़ना है, अन्दर खेद न आवे। घर में स्त्री-पुरुष का कोई झगड़ा हो जाता है तो वह गुस्सा बच्चों पर या बुज़ुर्गों पर निकलता है। हमें चाहिए कि ऐसी चाल चलें कि घर में कोई झगड़ा न हो। स्त्री पति ठीक तो बच्चे भी ठीक और बुज़ुर्ग भी ठीक। अगर बुज़ुर्गों को खान-पीन, बोल-चाल इत्यादि की तरफ से ठीक रखा जावे तो उनको क्रोध क्यों होवे। सब सजनों को समझौता देवें कि वह बुज़ुर्गों की ऐसी सेवा करें कि उनसे आसीस मिलें और बुज़ुर्ग कहें कि उनके घर में कैसी तबदीली आ गई है, घर पहले कैसे था अब कैसा हो गया है। हर तीन महीने के बाद जो बुज़ुर्ग सभा में न आ सकें तो उनके नामी सजनों से पूछें कि वह अपने बुज़ुर्गों के साथ कैसा वर्ताव कर रहे हैं। अगर वर्ताव ठीक नहीं तो सजनों को चेतावनी देवें कि एक दिन उन्होंने भी बुज़ुर्ग होना है, जैसे वह इस समय वर्ताव करेंगे वैसे उनको भुगतना पड़ेगा। गुरुवाणी का शब्द 'जासो पर नूं आसवे घर नूं' इसलिए सब सजन जिनके घर बुज़ुर्ग हैं, उनकी सेवा हर प्रकार से हँसकर करें और यश-कीर्ति की प्राप्ति करें। श्री महाबीर जी के द्वारे पर यश-कीर्ति आवे, अपयश न आवे। यह महाराज जी के वचन हैं, हम सब सजनों ने इनकी पालना करनी है 'महाबीर जी दे वचनां दी सजनों करो पालना'।

इन वचनों को भी ध्यान में रखना है कि कोई सजन भूलकर अपनी मानता न करावे। अब गुरु-चेले का अर्थ निकल चुका है, विचार शब्द और बोर्डों का भी अर्थ निकल चुका है। अन्त में तीनों तापों अर्थात आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक का भी अर्थ बता दिया गया है इसलिए कोई सजन भी भूलकर अपनी मानता न करावे। वह शहनशाह घड़ी-घड़ी, पल-पल, क्षण-क्षण में देखने वाले हैं, सुनने वाले हैं, हमें उनका डर होना चाहिए। इसलिए कोई सजन भी कोई गलती न खा बैठे और अपनी मानता न कराये।

सजनों को एक बार फिर चेतावनी दी जाती है कि वह नीति के अनुसार चलें, नीति के विरुद्ध न चलें, एकता दिखावें भिन्न-भेद न होवे। सब सजन जहाँ तक हो सके, जल्दी से जल्दी घर सतयुग बनावें फिर वह बेफिकरे राहवें। आप सजनों ने नाम लिया है महाराज जी नाल मेल खाने दी खातिर। सजनों को चाहिये कि वह ऐसा यत्न करें कि पहले तो महाराज जी नाल मेल खा जावो नहीं तो घर सतयुग जरूर बनावें। एक बार फिर लिखा

जाता है कि स्त्री-पति ठीक रहें तो बच्चे भी ठीक और बुज़ुर्ग भी ठीक, इसलिए सब सजन अपने बुज़ुगों को हर प्रकार से ठीक रखें। श्री महाबीर जी के द्वारे पर सजनों की यश-कीर्ति आवे। यहाँ याद रखना है कि सुपुत्र सजन वह है जो माता-पिता की सेवा अपने आप करता है और उन्हें फुरना नहीं आने देता। पुत्र वह है जो माता पिता से पूछ कर चले।

आगे सजनों जानो कि हर साल सावन की मीटिंग के बाद कलुकाल के कीर्तन बोलने शुरु करने हैं। यह कीर्तन इस कीर्तन से शुरु होते हैः-

'हे स्वामिन कलयुग नूं आप हटा, नारद जी रहे ने बता'

यह वचन हमेश के लिये हैं।

जय सीता राम जी।

पर्चा नम्बर - 2

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान।

सजन जी, जय सीताराम जी।

मीटिंग के लिये वचन वही हैं जो पर्चे में लिख भेजे हैं या जो वचन चैत्र की मीटिंग पर दिये थे। उन वचनों के अनुसार पहले बाल अवस्था की वृत्ति थी, अब समवृत्ति आ गई है। अब लम्बे लेक्चर बन्द हो गये हैं क्योंकि अन्त आ गया है और तीनों तापों का भी अर्थ निकल गया है। पहला ताप जीत लेने से अर्थात आत्मपद की प्राप्ति कर लेने से बाकी दो ताप (आधिभौतिक और आधिदैविक) बिना यत्नों समाप्त हो जाते हैं इसलिए जिन सजनों को महाराज जी नाल मेल खाने की चाहना है या जिन सजनों ने घर सतयुग बना लिये हैं तो वह यहाँ द्वारे पर आ सकते हैं और समवृत्ति ले सकते हैं। समवृत्ति लेने के लिये सजन पहले अपनी जाँचना-तुलना कर लेवें, फिर द्वारे पर आवें। जो बाकी दूसरे सजन है वह चार पढ़ाईयाँ करके आवें और सभा में नीति अनुसार इतवार, मंगलवार कीर्तन पर भी आवें। घर सतयुग बनावें फिर वे द्वारे पर आते रहें। यह वचन सब सजनों को समझाते आवें।

2 सजनों अब आगे वचन सुनो - सब सजनों को मालूम ही है कि वह सजन श्री शहनशाह जी जिनके चरणों में हम सब सजन हैं, वह अमर हैं। घड़ी-घड़ी, पल-पल, क्षण-क्षण में देखने वाले हैं और सुनने वाले हैं। अब यह पता चला है कि वह नामी सजन जो महाबीर जी के चरणों में हैं उनके बुज़ुर्ग उनके पास नहीं रहते बल्कि बेनामी सजनों के पास रहते हैं। ऐसे नामी सजनों के लिये वचन हैं कि वह इस बात की पड़ताल करें कि उनके बुज़ुर्गों की सेवा बेनामी सजन ठीक तरह से कर रहे हैं या नहीं और उन्हें खुश रखा हुआ है या नहीं। अगर वह वहाँ खुश हैं तो नामी सजन बुज़ुर्गों को अपनी कमाई में से हैसियत अनुसार कुछ दिया करें। अगर वह बेनामी सजनों के पास खुश नहीं और उनकी सेवा ठीक नहीं हो रही तो नामी सजन फौरन अपने बुज़ुर्गों को अपने पास बुला लेवें और उनकी हर प्रकार से सेवा हँसकर करें और उन्हें खुश रखें। सब सजन बुज़ुगों की ऐसी सेवा करें कि उनकी यश-कीर्ति लोक व परलोक जावे। लोक वह जगह या शहर है जहाँ आप सजन रहते हैं और परलोक वह है जो बाहर के दूसरे शहर हैं। जो नामी सजन इन वचनों को अनुसार बुज़ुर्गों को अपने पास बुला लेवें तो उनकी लिस्ट बनकर अपनी सभा की और बाहर की सभा जो आपकी सभा के साथ है उनकी मंगवाकर यहां द्वारे पर भेजा करनी है।

3 दूसरा - जहाँ-जहाँ सभाओं की मीटिंग हुई है तो महराज जी ने उनके बारे में 'श्री सजन जी' को सब कुछ दिखाया है और बताया है कि मीटिंग के पर्चे को सुनकर वह सारे सजन जिनके बुज़ुर्ग नहीं हैं, वह खुश हुए हैं। इसमें उनकी बड़ी भूल हुई है। उन्हें विचार करना था कि जब उनके बुज़ुर्ग जिन्दा थे तो खान-पीन, बोल-चाल, हँसन-खेडन की ओर से उन्होंने उनकी सेवा ठीक तौर पर की थी या नहीं और उन्हें प्रसन्न रखा था या नहीं। यह सोच करने की बजाये वह हँसे हैं, इस तरह उन्होंने अपनी मन्दी खरीद कर ली है। अब यह मन्दी खरीद उनकी तब समाप्त होगी जब वे अपने घर सतयुग बना लेवेंगे या महाराज जी के साथ मेल खा जावेंगे, नहीं तो जैसे उन्होंने अपने बुज़ुर्गों के साथ सलूक किया होगा, वैसे उन्हें भुगतना पड़ेगा। ऐसे सजन अगर अपने घर जल्दी से जल्दी सतयुग बना लेवें या महाराज जी के साथ मेल खा जावें तो उनका तभी इसमें बचाव है।

सभी सजनों को जय सीताराम जी।

इन पर्चों का एक-एक शब्द आपकी स्मृति में होना चाहिए ताकि आप इस ज्ञान का प्रयोग सही ढँग से कर सकें। इन पर्चों के अन्त में हमें कहा गया है कि हमने अपने आप को पकड़ना है। यहाँ सजनों इस परिप्रेक्ष्य में अपनी जाँचना करो कि हम कर क्या रहे हैं? हम तो अपने आप को पकड़ने की बजाए दूसरों की गल्तियाँ पकड़-पकड़ कर निन्दा-चुगली के रूप में उनकी चर्चा करते हैं और लड़ाई-झगड़े डलवाते हैं। इसकी तो कोई हद ही नहीं है। इतना बड़ा संसार है। इस संसार में जिससे भी मिलोगे, उसमे कुछ न कुछ कमी तो अवश्य होगी। अगर उस कमी को पकड़ कर चर्चा का विषय या सोच का विषय बना लोगे तो अपने प्रति ध्यान कब दोगे? यही सजनों आजकल हुआ पड़ा है। इन्सान का ध्यान अपनी कमियों से हटकर परिवारजनों, पड़ोसियों व अन्य सामाजिक सदस्यों की कमियाँ निकालने में लग गया है। कभी कहते हो कि यह बुरा है, कभी कहते हो वह बुरा है। क्या कभी देखा है कि मैं कितना बुरा हूँ? क्या ख़ुद को बुरा कहते हुए शर्म आती है? आप नहीं कहते पर जिनको आप बुरा कहते हो वे भी तो आपको बुरा ही कहते हैं। तो क्या ऐसे स्वभाव दिखाने पर परिवार का व समाज का अच्छा निर्माण हो रहा है? क्या इससे आपकी मानसिकता की अच्छी बनत बन रही है? याद रखो इसका सीधा सा अर्थ है कि आप गुरुमत से हटकर मनमत पर चढ़ गये हो और अन्यों को भी चढ़ा रहे हो। जानो कुदरत आपको इस ग़ुनाह के लिए कभी माफ नहीं करेगी। अतः कुदरत की ताकत को समझो। कुदरत तो समय-समय पर अपनी ताकत आपको दिखा रही है। कहीं जल का ताँडव करके, कभी अग्नि का ताँडव करके तो कहीं युद्धों के माध्यम से कुदरत अपना ताँडव दर्शा रही है और आपको समझाने का प्रयास कर रही है कि हे इन्सान ! होश में आ जा क्योंकि युग परिवर्तन की कगार पर खड़ा है। इस सत्य के दृष्टिगत सजनों अपने स्वभावों में यथा समय ही तबदीली ले आओ। अगर कुदरत के सन्देश को समझकर उसकी बात मान लेते हो तो आप अपने सजन हो और जन्म-मरण से छुटकारा पा सकते हो। अतः अब आज की बात सुनने के पश्चात यत्न करना और स्वार्थपरता का रास्ता छोड़ परमार्थ बनने हेतु नाम व अक्षर शीघ्र ही ले लेना। इस तरह सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की कृपा के पात्र बन जाना। इस बात को सबने प्राथमिकता देनी है। इस सन्दर्भ में जानो कि जो हार गया वह हार गया। इसके बाद उसके जीतने की कोई सम्भावना नहीं रहेगी।

अब आगे अब अपनी सालाना पढ़ाई के विषय में सुनोः

सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार हमारी पढ़ाई

चैत्र की मीटिंग से लेकर सावन की मीटिंग तक

सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित पैगाम वाले कीर्त्तनों की वाणी पर अमल करते हुए सजनों ने अन्दरूनी वृत्ति और बैहरूनी वृत्ति दोनों का रोना-झुखना बंद करना है अर्थात् जिह्वा स्वतन्त्र और अफुर अवस्था को धारण करना है।

सावन की मीटिंग से लेकर कार्तिक की मीटिंग तक

चैत्र की मीटिंग से लेकर सावन की मीटिंग तक का सबक यादगीरी में रखते हुए प्रत्येक सजन ने ग्रन्थ में से कलुकाल वाले कीर्तन तरतीब से पढ़ने आरम्भ करके कार्तिक की मीटिंग तक सारे कीर्तन पढ़कर अर्थ सहित समझ लेने हैं। इसका मुख्य उद्देश्य स्वभावों में से कलुकाल हटा 'हौं-मैं'' को मिटाकर कार्तिक की मीटिंग से पहले घर सतयुग बना लेना है। इसके साथ ही विराट दृष्टि पर खड़े होकर ब्रह्म-वृत्ति को ठहरा लेना है। कैसेः- जिह्वा स्वतन्त्र, संकल्प स्वच्छ और निगाह कंचन करके।

इसके अतिरिक्त मीटिंग वाले दिन पढे गए बुजुर्गों, बच्चों और गृहस्थ के फर्ज-अदा के पर्चों के अनुरूप अपनी जाँचना कर लेनी हैं और अपने आप को गृहस्थ-आश्रम ठीक ढंग से चलाने के लिए व हर एक के प्रति अपना फर्ज़-अदा हँसकर करने के लिए कहना व समझाना है।

सजन जीः- सजनों जानो इस क्रिया को करके यानि स्वयं में थोड़ा सा बदलाव लाने पर आप स्वाभाविक तौर पर बहुत ऊँचे उठ सकते हो और अपने गृहस्थ-आश्रम में एकता और शान्ति स्थापित कर सकते हो। इस तरह जीवन जीने का मजा आ जाएगा और जीवन

अच्छा लगने लगेगा क्योंकि हम संगठित रुप से मिलजुल कर कठिन से कठिन कार्य सहजता से कर लेंगे और इस तरह परोपकार कमा सकेंगे।

कार्तिक की मीटिंग से लेकर गदे के यज्ञ की मीटिंग तक

अब तक पढाए गए सबक के बारे में अपनी जाँचना-तुलना कर उस पर परिपक्वता से तैयार होने के साथ-साथ विचार शब्द तथा समभाव-समदृष्टि को परिपक्वता से ठहरा लेना है।

गदे की मीटिंग से लेकर चैत्र के यज्ञ की मीटिंग तक

इस अंतराल में चैत्र के यज्ञ से लेकर अब तक मिलें सबक के विषय में दोहराई कर अपनी परिपक्वता व कमज़ोरी की जाँचना कर अपना नतीजा परख लेना है। इस प्रकार अपनी जो भी कमज़ोरियाँ समझ में आएँ उन्हें पौने दो महीने किए जाने वाले महामन्त्र के गुप्त जाप द्वारा चैत्र के यज्ञ तक दूर कर लेना है। इस प्रकार चैत्र के यज्ञ पर समभाव-समदृष्टि के सबक पर परिपक्वता से पूर्णतया खड़े होकर आना है।

सजनों इस पढ़ाई के अनुरूप सबने ठीक से चलना है और विजय प्राप्त करनी है।

आप ऐसा करने में सफल हों, इन्ही शुभकामनाओं सहित।